व्यंग्य- पत्नियां आखिर करती ही क्या हैं?

कभी-कभी लगता है जैसे किसी ने कोई वैज्ञानिक रहस्य खोज लिया हो, जिसे समझने के लिए नासा को बुलाना पड़े! आओ ज़रा इस "अज्ञात प्राणी" — अर्थात पत्नी — के दैनिक जीवन पर एक शोध कर ही लेते हैं। सुबह सूरज उगने से पहले, जब दुनिया अभी खर्राटे ले रही होती है, तब पत्नी उठ जाती है। चाय बनाती है, नाश्ता तैयार करती है, बच्चों को उठाती है, स्कूल बस के पीछे भागती है, फिर पति को याद दिलाती है — "अरे, टिफिन तो लेना भूल गए!" लेकिन कोई इसे काम नहीं कहता, क्योंकि सबकी नज़रों में यह तो "ड्यूटी ऑफ लव" है — जिसे करने का कोई वेतन नहीं, कोई छुट्टी नहीं, कोई तारीफ़ नहीं। फिर दिन की दूसरी पारी शुरू होती है — झाड़ू, पोछा, बर्तन, कपड़े, सब्ज़ी, राशन, सिलेंडर, बिजली का बिल, बच्चों का होमवर्क, सासू माँ की दवा, पड़ोसन की शिकायत और पति के मूड स्विंग्स का मैनेजमेंट! अगर किसी कंपनी में इतनी ज़िम्मेदारियाँ होतीं, तो पदनाम होता — "गृह-प्रबंधन विभाग की मुख्य कार्यकारी अधिकारी", पर अफ़सोस यहाँ नाम होता है — "सिर्फ़ गृहिणी"।

अब देखिए आधुनिक संस्करण — वह पत्नी जो वर्किंग भी है। वही सुबह-सुबह सारे घरेलू काम करके दफ़्तर पहुँचती है, बॉस के ईमेल्स का जवाब देती है, मीटिंग संभालती है, और फिर लौटकर घर में दूसरा ऑफिस खोल देती है — जहाँ बॉस, क्लाइंट और कस्टमर तीनों एक ही व्यक्ति में समाए रहते हैं — पति महोदय! रात को जब थककर सोफ़े पर गिरती है, तो सुनने को मिलता है — "अरे, तुम तो बस ऑफिस में बैठी रहती हो, इतना थकने की क्या बात है?" और वह मुस्कुरा देती है, क्योंकि जवाब दे तो "बोली-बातूनी", और चुप रहे तो "संस्कारवती" कहलाती है।

कभी सोचा है, अगर एक दिन पत्नियाँ "कामबंदी" पर चली जाएँ? सुबह चाय नहीं, बच्चों की यूनिफ़ॉर्म नहीं, नाश्ता नहीं, बिल नहीं, दवा नहीं — तो आधे घंटे में घर से निकलने वाला पति दोपहर तक मोज़े ढूँढता रह जाएगा। और तब शायद अख़बार की हेडलाइन बने —

"देशभर में गृह-व्यवस्था ठप, पत्नियाँ हड़ताल पर!" लेकिन वो ऐसा नहीं करतीं, क्योंकि वो जानती हैं कि घर केवल ईंट और सीमेंट से नहीं, बल्कि थोड़ी सहनशीलता, ढेर सारा त्याग और अनगिनत छोटे-छोटे कामों से बनता है।

अब कल्पना कीजिए, अगर एक दिन ईश्वर आदेश दें कि — "आज से पत्नियाँ विश्राम करेंगी और उनके सारे काम पति करेंगे।" सुबह-सुबह अलार्म बजते ही पति लोग पहले तो सोचेंगे — "कौन है ये अलार्म बजाने वाला दुश्मन?" फिर याद आएगा कि दूधवाला आता है, बच्चों को स्कूल भेजना है, नाश्ता बनाना है, और फिर रसोईघर का दरवाज़ा पहली बार खुलेगा, जैसे कोई अनदेखा ग्रह खोजा गया हो। तवे पर रोटी गोल नहीं, गोल-गोल ग्रह बनेंगी — एक मंगल, एक बृहस्पति! बच्चे कहेंगे — "पापा, ये क्या बना दिया?" और पापा गर्व से कहेंगे — "ये इनोवेशन है बेटा, नई रेसिपी!" दोपहर तक घर ऐसा लगेगा जैसे भूकंप राहत शिविर लगा हो — कपड़े आधे धुले, गैस आधी खुली, दाल आधी जली। पति सोचेंगे — "अरे, इतना काम तो दफ़्तर में भी नहीं होता!" और शाम तक वे खुद को सोफ़े पर फेंक देंगे, हाथ जोड़कर कहेंगे — "प्रभु! अब समझ आया, मेरी पत्नी सिर्फ़ गृहिणी नहीं, गृह-शक्ति है!"

कभी सोचा है, अगर एक दिन पत्नियाँ "कामबंदी" पर चली जाएँ? सुबह चाय नहीं, बच्चों की यूनिफ़ॉर्म नहीं, नाश्ता नहीं, बिल नहीं, दवा नहीं — तो आधे घंटे में घर से निकलने वाला पति दोपहर तक

रात को थके-हारे पति जब कहेंगे — "आज बहुत काम कर लिया..." तो पत्नियाँ मुस्कुराते हुए कहेंगी — "बस एक दिन में ही थक गए? हमने तो सालों से ये ओलंपिक खेला है!" अब समझे, पत्नियाँ आखिर क्या करती हैं? वो वो सब करती हैं, जो बिना किए तुम्हारी दुनिया एक घंटे में बिखर जाएगी।

— *बबिता कुमावत* , सहायक प्रोफेसर,

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, नीमकाथाना (सीकर)